भीकमकोर ठिकानेदार सूरजमल की मारवाड़ रियासत में भूमिका का अध्ययन

*भवानी सिंह राजपुरोहित

शोध सारांश

प्रस्तुत आलेख में भीकमकोर ठिकानेदार सूरजमल के योगदान का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। ठिकानेदार सुरजमल द्वारा जोधपुर गढ़ के घेराव में महाराजा मानसिंह के पक्ष में रहकर युद्ध किया था, उस समय विभिन्न शाखाओं के लोगों ने अपने प्राण सस्ते कर दिये। सुरजमल भाटी ने महाराजा मानसिंह के प्रति पूर्ण स्वामी भक्ति का परिचय दिया। सूरजमल ने अपनी पुत्री रायकंवर का विवाह मानसिंह के साथ करके मारवाड़ रियासत के साथ वैवाहिक सम्बन्ध भी स्थापित किये।

सकेंताक्षर– सूरजमल मानसिंह, भीमसिंह, भीकमकोर, मारवाड़, जालौर, महाराजा, भाटी, गढ, बही।

भगवानदास के द्वितीय पुत्र सूरजमल के वंशजों को भीकमकोर ठिकाना पट्टे में मिला था। महाराजा मानसिंह की सेवा में रहते हुए इन्होंने न सिर्फ जालौर घेराव और जोधपुर के घेराव में अपनी महत्त्वपूर्ण सेवाएं अर्पित की थी। जोधपुर घेराव के समय इन्होंने प्राणोत्सर्ग कर भाटी कुल को गौरवान्वित भी किया।

ख्यात भाटी के अनुसार मानसिंह के विपत्तिकाल में सूरजमल उनके साथ बना रहा था। ख्यात में लिखा मिलता है कि महाराजा भीमसिंह और मानसिंह के बीच जब जालौर में संघर्ष चला। उस विकट घड़ी में मानसिंह द्वारा अनुरोध करने पर भगवानदास का पुत्र कुशलसिंह और सूरजमल ससैन्य जालौर किले में आकर रहे थे। ख्यात से यह भी ज्ञात होता है कि सूरजमल ने अपनी पुत्री रायकंवर का विवाह मानसिंह के साथ कर जोधपुर राजघराने के साथ अपने सम्बन्ध स्थापित किये थे।[1]

वि.सं. 1857 में जिस समय महाराजा भीमसिंह जयपुर नरेश प्रतापसिंह की बहन से विवाह करने पुष्कर गये, उस समय मानसिंह ने मौका देखकर पाली नगर को लूट लिया। इसकी सूचना मिलने पर महाराजा ने सिंघी चैनकरण और बलूंदा ठाकुर चांदावत बहादुरसिंह को उनके विरुद्ध कार्यवाही करने को कहलाया। इस पर वे साकदड़े पहुँचे और सिंध को घेर लिया। लेकिन उनके साथ खेजड़ला ठाकुर जसवंतसिह के भाई जोधसिंह आदि ने राजकीय सेना को सम्मुख युद्ध में फँसा कर मानसिंह को जालोर पहुँच जाने का मौका दे दिया। भाटी जोधसिंह के साथ ही कई अलग–अलग वंश विशेष के सरदारों ने राजकीय सेना का दृढ़ता के साथ मुकाबला किया, जिसमें भाटी जोधसिंह काम आया था।[2]

गढ़ जालौर घेरे री बही में साकदड़े में उपस्थित रहने और काम आने वाले सरदारों के नाम दिये गये मिलते हैं, जिनमें भाटी जुगतसिंह (ओलवी), फतेसिंह (कापरड़ा), नथराज, गुलाबसिंह (कुड़), सूरजमल (नान्दण), जोधसिंह (भूडानो), मनरूप (मलार), फतेसिंह (सूरजणियावास), रतनसिंह (लालियो), गेनसिंह (बालाकुवो), गोविन्दसिंह (जाखण) आदि जालौर घेराव के समय भी उपस्थित रहे थे।[3]

अनन्तर महाराजा की आज्ञानुसार सिंघवी वनराज ने पुनः ससैन्य जाकर जालौर पर घेरा डाला और इधर राज्य की ओर से आउवा, आसोप, चंडावल, रोहट, रास व नींबाज आदि ठिकानेदार जो राज्य कार्य में बाधा उत्पन्न कर रहे थे

उनके पट्टे जब्त किये गये। उपद्रवी सरदारों को राज्य से बाहर निकालने के पश्चात् इन्द्रराज भी जालौर पहुँचा। उसके पश्चात् वि.सं. 1860 श्रावण सुदि 7 (ई.सं. 1803 ता. 25 जुलाई) को इन्द्रराज, वनराज व गुलराज तीनों भाइयों तथा भंडारी गंगाराम ने एक साथ चार तरफ से जालौर पर आक्रमण किया। एक बड़ा संग्राम होने के पश्चात् उनका नगर पर अधिकार स्थापित हो गया और नगर की जनता गढ़ में प्रवेश कर गई। इस लड़ाई में सिंघवी बनराज गोली लगने से मारा गया था। इससे किले वालों का बाहरी सम्बन्ध बिल्कुल टूट गया और थोड़े ही दिनों में रसद् आदि की कमी हो जाने से मानसिंह को किला छोड़ कर निकल जाने का इरादा करना पड़ा लेकिन इसी समय देवनाथ नाम के एक योगी ने मानसिंह को कुछ दिन और धैर्य रखने को कहा। उन्होंने ऐसा ही किया और इसी बीच महाराजा की अदीठ की बीमारी के चलते कार्तिक सुदि 4 (ता. 29 अक्टूबर) को देहान्त हो गया। इसका समाचार जालौर पहुँचने पर भंडारी गंगाराम और सिंघी इन्द्रराज ने महाराजा भीमसिंह के पीछे पुत्र न होने की दशा में उस चलते हुए युद्ध को तत्काल बंद कर दिया।[4]

गढ़ जालौर घेरा री बही में विभिन्न शाखा विशेष के लोगों का हवाला प्रस्तुत किया गया मिलता है, जिन्होंने मानसिंह के समय उनकी मदद की थी। उनकी इस मदद को मानसिंह ने अपने जोधपुर राज्यभिषेक के समय भी याद रखा और योग्य सरदारों को इस अवसर पर जागीर प्रदान कर अपना फर्ज भी निभाया था।

सूरजमल ने न सिर्फ साकदड़े के युद्ध अभियान में बल्कि जालौर घेराव के समय में भी मानसिंह की ओर से महाराजा भीमसिंह की सेनाओं का प्रतिरोध किया था।[5] जालौर घेरे री बही के अनुसार जालौर घेराव में नगराज घायल हुए वहीं रतनसिंह काम आया था।[6]

जोधपुर गढ़ के घेराव में सूरजमल का महाराजा मानसिंह के पक्ष में रहकर लड़ना

महाराजा भीमसिंह की निःसंतान मृत्यु होने पर मारवाड़ के मुत्सद्दियों और कतिपय उमरावों की इच्छानुसार 1803 ई. में मानसिंह जोधपुर का शासक बना था। इसमें ठा. सवाईसिंह पोकरण की राय नहीं लेने के कारण वह महाराजा के प्रति उदासीन बना रहा। अनन्तर 1807 ई. में पोकरन ठा. सवाईसिंह की बातों में आकर जयपुर नरेश जगतसिंह व बीकानेर नरेश सूरतसिंह ने जोधपुर गढ़ का घेराव किया। उस घेराव में भाटियों ने महाराजा मानसिंह के पक्ष में रहकर उनसे संघर्ष किया था। गढ़ जोधपुर घेरे की बही में इस संघर्ष के प्रत्येक चरण का हवाला एवं संघर्ष में सहयोग देने वाले विभिन्न खांपों के लोगों का नामोल्लेख दिया गया है। इस बही का सम्पादन डॉ. हुकमसिंह भाटी ने किया है। इस बही के अनुसार जयपुर सेना का जोधपुर घेराव का विस्तृत विवेचन इस प्रकार दिया जाना समिचिन होगा[7] –

"महाराजा मानसिंह और सवाईसिंह के बीच मनमुटाव रहा था। सवाईसिंह महाराजा भीमसिंह की मृत्यु के पश्चात् उत्पन्न हुए उसके पुत्र धोंकलसिंह को जोधपुर राज्य की गद्दी का हक दिलाने का प्रयास करने लगा। इसके साथ ही कृष्णाकुमारी की समस्या उठ खड़ी हुई। उदयपुर के महाराणा भीमसिंह की पुत्री कृष्णाकुमारी की सगाई महाराजा भीमसिंह के साथ की गई थी। उक्त महाराजा की मृत्यु होने पर महाराणा ने उसकी सगाई जयपुर महाराजा जगतसिंह के साथ करने का निश्चय किया। महाराजा मानसिंह को उकसाने का यह एक अच्छा अवसर सवाईसिंह को मिल गया। उसने राठौड़ राजघराने का अपमान मानते हुए इस पर तुरन्त कार्रवाई करने के लिए महाराजा से अनुरोध किया। महाराजा मानसिंह ने महाराणा भीमसिंह के साथ सम्पर्क साधकर कृष्णाकुमारी का विवाह अपने साथ किये जाने के लिए कहलाया परन्तु महाराणा ने उसके कथन की ओर ध्यान नहीं दिया और सगाई की बात पक्की करने के लिए जयपुर टीका भेज दिया। इस पर महाराजा मानसिंह ससैन्य मेड़ता पहुँचे और उदयपुर से टीका ले जाने वाले दल का प्रतिरोध किया। महाराजा जगतसिंह को जब इस बात का पता चला तो वह मानसिंह से लड़ने के लिए तत्पर हुआ परन्तु सिंघवी इन्द्रराज के प्रयासों से दोनों राजाओं के बीच समझौता हो गया और टीका भरने

वालों को पुनः उदयपुर लौटना पड़ा। उस समय सवाईसिंह ने दोहरी चाल चलते हुए महाराजा जगतसिंह को उकसाया कि टीका लोट जाने से कछवाह राजघराने की बदनामी हुई है, अतः आपको बदला लेना चाहिए।[8]

इस प्रकार की आपा–धापी से वातावरण महाराजा मानसिंह के विरुद्ध निर्मित हो गया। सवाईसिंह ने बड़लू के ठाकुर शार्दुलसिंह कूंपावत और रास ठाकुर जवानसिंह उदावत को अपने पक्ष में कर धोंकलसिंह को राजगद्दी पर आसीन कराने का अभियान तेज कर दिया। उसने जयपुर महाराजा को समझाया कि धोंकलसिंह को गद्दी पर बैठाने से कृष्णाकुमारी के साथ आपका विवाह करने का मार्ग सुगम हो जाएगा। बीकानेर महाराजा सूरतसिंह को भी उसने अपने पक्ष में कर लिया। सवाईसिंह की ऐसी घातक गतिविधियों का पता जब मानसिंह को लगा तब उसने ससैन्य परबतसर की ओर प्रस्थान किया। उस समय बूंदी के महाराव राजा बिशनसिंह और किशनगढ़ के महाराजा कल्याणसिंह की सेनाएं महाराजा मानसिंह के सहायतार्थ पहुँची। उधर सवाईसिंह के प्रयासों से बीकानेर के महाराजा सूरतसिंह, शाहपुरा के राजा अमरसिंह और जयपुर के महाराजा जगतसिंह की सेनाएं लड़ाई करने के लिए तत्तपर हुईं। गींगोली में दोनों तरफ की सेनाओं ने अपना मोर्चा सम्भाला। तोप की एक आवाज होते ही मारोठ, धांधिया, हरसोलाव, सथलाणा, सवराड़ और चवां के ठाकुर महाराजा मानसिंह का पक्ष छोड़कर धोंकलसिंह के खेमे में आ गये। महाराजा मानसिंह के पक्ष में आसोप, आउवा, नींबाज, रास, कुचामन, बूड़सू और खेजड़ला के ठाकुर शेष रह गये। इन्होंने अपना पक्ष कमजोर देख कर लड़ाई करना उचित नहीं समझा और वे महाराजा को लेकर पलायन कर गए। उस समय यद्यपि महाराजा मानसिंह ने जोधपुर परित्याग कर पुनः जालौर में जाने का मानस बना लिया था परन्तु कुचामन के ठाकुर शिवनाथसिंह मेड़तिया ने महाराजा को समझाया कि अगर आप जालौर चले गये तो फिर जोधपुर का गढ़ आपके हाथ से निकल जाएगा। इस पर महाराजा ने जोधपुर गढ़ में रहकर मुकाबला करने का निश्चय किया।[9]

इसी बीच जयपुर के महाराजा जगतसिंह ने कृष्णाकुमारी के साथ विवाह करने के लिए उदयपुर जाने का निश्चय किया। इस पर सवाईसिंह ने महाराजा से अनुरोध किया कि पहले ससैन्य जोधपुर चलकर धोंकलसिंह को गद्दी पर बैठा दें फिर उदयपुर चले जावें। ऐसा करने से आपकी कीर्ति बढ़ेगी। महाराजा जगतसिंह ने सवाईसिंह की बात मान ली और वह जोधपुर की ओर अग्रसर हुआ। सवाईसिंह ने मेड़ता और पीपाड़ के अनेक गाँवों में लूट–पाट कर धनराशि इकट्ठी की और वि.सं. 1863 चैत्र वदि 7 (30 मार्च 1807 ई.) को वह जोधपुर पहुँचा। पीछे से जयपुर महाराजा जगतसिंह और बीकानेर महाराजा सूरतसिंह ससैन्य जोधपुर आ धमके। इस सेना ने जोधपुर नगर को चारों ओर से घेर लिया। अमीरखां ने भी इसमें सहयोग दिया। ऐसी स्थिति देख महाराजा मानसिंह ने इन्द्रराज सिंघवी और गंगाराम को जो कैद में थे, मुक्त कर उन्हें अपनी होशियारी दिखाने के लिए कहा। उन्होंने सवाईसिंह से मिलकर समझौता करने का प्रयास किया। सवाईसिंह ने कहा कि बनियों के जोर से किसी को राजा नहीं बनाया जाता, इसका निर्णय तो राव रणमल के वंशज करते आये हैं। 'रिड़मल रा थापिया राजा हुवै है, माहजनां रा थापिया राजा नहीं हुवै।' मानसिंह से कहो कि वह पुनः जालौर चला जाये। इन्द्रराज ने कहा कि तो हम तटस्थ रहना चाहते हैं। मेरे साथ मारवाड़ के सरदारों को घेरे से बाहर निकलने दें। सवाईसिंह की स्वीकृति मिलने पर शिवनाथसिंह मेड़तिया (कुचामन), प्रतापसिंह मेड़तिया (बूड़सू), केसरीसिंह कूंपावत (आसोप), बख्तावरसिंह चांपावत (आउवा) और सुरताणसिंह उदावत (निंबाज) आदि उमराव अपनी सेना सहित नगर के बाहर निकल गए। किले के अन्दर अनाड़सिंह चांपावत (आहोर), उदयराज चांपावत (दासपा), जसवंतसिंह महेचा (जसोल) और इन्द्रकरण करणोत (समदड़ी) आदि उमराव रहे।[10]

वि.सं. 1864 चैत्र सुदि 11 (1807 ई. 18 अप्रैल) को गढ़ का घेराव प्रारम्भ हुआ। उस समय महाराजा मानसिंह ने पुनः समझौता करने का प्रयास किया। सवाईसिंह ने मानसिंह को जोधपुर का किला छोड़कर जालौर चले जाने और क्षतिपूर्ति के रूप में 22 लाख रुपये देने के लिए कहा। महाराजा मानसिंह किला छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे,

इसलिए समझौता नहीं हो सका। इसी बीच अमीरखां और सवाईसिंह के बीच सेना खर्च को लेकर मनमुटाव हो गया जिससे अमीरखां अपनी सेना लेकर चला गया। इन्द्रराज सिंघवी ने सुअवसर देखकर शिवसिंह चांदावत मेड़तिया (बलूंदा) की सहायता से अमीरखां को अपने पक्ष में कर लिया और प्रजा से धन बटोर कर उसे परितुष्ट किया। जयपुर के दीवान रायचंद ने जयपुर से खर्चा भेजना बन्द कर दिया। इस पर जयपुर की सेना का खर्चा सवाईसिंह को वहन करना पड़ा और उसकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई। उसने लूट–मार का अभियान तेज कर दिया। जिसमें जोधपुर के सेठ–साहूकारों की स्थित शोचनीय हो गई। गोपालदास पंचोली ने सवाईसिंह को समझाया कि अपनी जनता पर यों जुल्म करना ठीक नहीं है। आज्ञा हो तो मैं वसूली कर हरसम्भव द्रव्य आपको देता रहूँगा। सवाईसिंह ने उसकी बात मान ली। इससे जोधपुर की जनता को कुछ राहत मिली।[11]

महाराजा मानसिंह के स्वामीभक्त उमरावों, सरदारों और मुत्सद्दियों आदि ने गढ़ की सुरक्षा का प्रबन्ध उत्तम ढंग से किया। तीन महीने से भी ज्यादा समय हो गया पर गढ़ नहीं टूटा। विपक्षियों ने सुरंगें लगाकर गढ़ की बुर्जें ध्वस्त करने का निश्चय किया। श्रावण मास (जुलाई) में गढ़ के फतेपोल द्वार के निकट सुरंग लगाने का प्रयास किया गया परन्तु फतेपोल मोर्चे पर तैनात अर्जुनोत भाटियों ने गर्म तेल ऊपर से उड़ेल कर शत्रु के मंसूबे को विफल कर दिया। गर्म तेल से कुछ आदमी मारे गये और कई भाग खड़े हुए। रानीसर के बुर्ज को ध्वस्त करने के लिए भी सुरंग लगाई गई। जिसके विस्फोट से किले में स्थित कई लोग घायल हुए और मारे गए। बहादुरसिंह तंवर मारा गया जिसकी छतरी राणीसर पर बनाई गई। लखणापोल दरवाजे के बाहर जयपुर के दादूपंथी साधुओं का जमघट था। जसोल जसवंतसिंह ने उन पर धावा बोल कर साधुओं को भगा दिया। उस समय कीर्तिसिंह सोढ़ा वीरता से लड़ता हुआ काम आया। उसकी स्मृति में जयपोल के बाहर छतरी का निर्माण करवाया गया। राखी का चौहान श्यामसिंह (महाराजा मानसिंह का मामा) जयपोल के बाहर ही उसकी भव्य छतरी बनाई गई।[12]

गढ़ पर आक्रमण करने की गतिविधियाँ जब तेज हो गईं तो कल्याणमल लोढ़ा ने दौलतराव सिन्धियाँ से सम्पर्क कर गढ़ का घेराव तोड़ने का प्रयास किया, परन्तु सवाईसिंह चांपावत ने अग्रसर होकर सिंधिया के सेनापति आंबा इग्लिया और कप्तान जान बेप्टिस्ट (जान बत्तीसी) को अपनी ओर मिला लिया। इसी बीच महाराजा जगतसिंह के निर्देशानुसार शिवलाल बख्शी ने ससैन्य जयपुर से कूच किया। इन्द्रराज सिंघवी ने उसका रास्ता रोकने के लिए अमीरखां से मदद ली। कुचामन के ठाकुर शिवनाथसिंह मेड़तिया और बूड़सू के प्रतापसिंह मेड़तिया आदि मिलकर एक सेना तैयार की और फागी गाँव में जाकर शिवलाल की सेना से मुकाबला किया। शिवलाल परास्त होकर भाग गया। शिवसिंह मेड़तिया ने इसका झोटवाड़ा तक पीछा किया, जिससे जयपुर की प्रजा घबराने लगी। इसी समय आउवा, आसोप, नींबाज, लांबिया, बडू, बोड़ावड़, तोसीणां आदि ठिकानेदार अपनी सेना लेकर इन्द्रराज सिंघवी के शामिल हो गए। अमीरखां और मारवाड़ की संयुक्त सेना जयपुर की ओर अग्रसर हुई। इसकी सूचना जब महाराजा जगतसिंह को मिली तो वह अपने राज्य की सुरक्षा के लिए चिंतित हो उठा और भाद्रपद सुदि 13 (1807 ई., 14 सितम्बर) को जोधपुर से प्रस्थान कर गया। बीकानेर का महाराजा सूरतसिंह भी रवाना हो गया। ऐसी स्थिति में सवाईसिंह ने जोधपुर में ठहरना उचित नहीं समझा और वह उसी रात्रि को अपनी सेना लेकर निकल गया। भाद्रपद सुदि 14 (1807 ई. 17 सितम्बर) को सूर्योदय होने पर महाराजा मानसिंह को पता लगा कि घेराव उठ गया है तब गढ़ के दरवाजे खुलवा दिये गये और सर्वप्रथम आयस देवनाथ को महामन्दिर में पहुँचाया।

बही के अध्ययन से पता चलता है कि भाटी, चोहान (खींची, सांचोरा, सोनगरा और देवड़ा), सोढ़ा–पंवार, गोहिल, कछवाह, ईंदा–पड़िहार, गौड़, तंवर, दहिया, ब्राह्मण, चांपावत, कूंपावत, मेड़तिया, पातावत, करनोत, उदावत, बाला, जोधा, देवराजोत, मंडला, सिंधल, उहड़, ओसवाल, दरजी, रेबारी, जाट, नाई, धोबी, घांची, मुसलमान, कायस्थ आदि जाति के लोगों ने निष्ठा से अपने कर्त्तव्य का पालन किया और कुल मिलकार करीब 200 योद्धा गढ़ की रक्षार्थ

घायल हुए अथवा मारे गए। वैशाख वदि 6 को रानीसर पर विस्फोट हुआ। उस समय एक ही साथ 18 योद्धा मारे गए और 28 घायल हुए। इसमें राठौड़ योद्धाओं की संख्या ज्यादा थी और एक–दो को छोड़कर सारे राजपूत थे। यह तथ्य भी उजागर हुआ है कि घेराव के समय मारे गए योद्धाओं के एवज में उनके दूसरे भाई–बन्धु आकर उपस्थित होते रहे।"

गढ़ जोधपुर घेरे की बही से ज्ञात होता है कि उस समय विभिन्न शाखाओं के लोगों ने अपनी इज्जत महंगी और प्राण सस्ते कर दिए। भाटियों ने महाराजा मानसिंह के प्रति पूर्ण स्वामीभक्ति का परिचय दिया था जिनमें सूरजमल भाटी का भी अवदान महत्त्वपूर्ण रहा था। जोधपुर के घेराव के समय निम्नलिखित भाटी उपस्थित थे, उनके नाम इस प्रकार हैं[13] –

1. भाटी सूरजमल भगवानसिंहोत रावलोत (भीकमकोर)
2. भाटी सगतीदान जोधसिंहोत (साथीन)
3. भाटी जगतसिंह धीरतसिंहोत (ओलवी)
4. भाटी धन्नो रुगनाथ रो (तसोली)
5. भाटी नवलसिंह देईदानोत (बोयल)
6. भाटी सेरसिंह प्रतापसिंहोत (बरबटो)
7. भाटी जयसिंह फतेसिंहोत (बावड़ी)
8. भाटी कल्याणसिंह भैरूंसिंहोत (लालपुरो)
9. भाटी धीरतसिंह भगोतसिंहोत (भूंगरो)

इनके अतिरिक्त कई भाटी इस युद्ध अभियान में शामिल रहे थे। गढ़ जोधपुर घेरे री बही में भाटी सूरजमल का पांच सहयोगियों के साथ युद्ध में सम्मिलित होने का विवरण लिखा मिलता है जिनमें भाटी कनीराम देवरामोत, बेहली मयाराम बखता का, भाटी करणो मूलचंद का, कलर जोगी हमीर का, चाकरली लिछमण आदि। ख्यात भाटी के अनुसार सूरजमल ने जोधपुर घेराव के समय अद्भूत वीरता का परिचय देते हुए प्राण न्यौछावर किये थे।[14]

सूरजमल बड़ा ही वीर पुरुष हुआ था। महाराजा मानसिंह की सेवा में रहते हुए उसने सर्वप्रथम साकदड़े के युद्ध अभियान तत्पश्चात् गढ़ जोधपुर के घेराव के समय अपनी वीरता का परिचय दिया था। भाटी वंश का गौरवमय इतिहास से ज्ञात होता है कि इन्होंने अपनी पुत्री राय कंवर का विवाह महाराजा मानसिंह के साथ कर जोधपुर राजघराने के साथ अपने सम्बन्ध स्थापित किये थे।[15] इन्हीं राय कंवर ने जोधपुर स्थित पदमसागर जलाशय पर नाथजी का मन्दिर बनवाया था। राणीमंगा भाटों की बही में रानी रायकंवर के विवाह के सम्बन्ध में लिखा मिलता है–'रांणी रायकंवर भटीयाणी सूरजमल भगवांनदासोत री भगवांनदास सिरदारसिंघोत री। सिरदारसिंघ रावल सबदसिंघोत री। सीरेकंवर, सरूपकंवर बाई री माता ठिकाणा–जैसलमेर में खरीया री। रांणी मंगा आईदान समत् 1862 रा चेत सुद 11 नै नांम मंडायौ। दरोगो नाजर सीभुरांम चेलो ईमरतरांम रुपिया 15) दीना। वडी वडारण हसतु दुसाला री फड़द सवा गोरू पेटा रा रुपिया 5) दीना। डोडीदार कोटेचा लालसिंघ गेलोत हीरदेरांम वाका नवेस कला गुमांनीरामजी वनराज अमरचंद वास नागौर रा। श्री नाथजी रो मींदर समत् 1835 रा रांणी रायकंवर भटियांणी करायौ पदमेसर उपर नै रांणी मंगा भेरु ने सीरोपाव दे नांम मंडायो। परतीसटा माहा सुद 15 नै कराई। महाराजा साब खुद पदार होम में वीराज पूजा कराई मंदिर रो नांम नीज मंदिर भवन दीरायौ। जीण नीज भवन रौ नांम रांणीमंगा री बही में मंडायौ। रांणी मंगा भेरूदांन नै समत् 1892 रा जेठ सुद 3 नै। दरोगो नाजर ईलमास डोडीदार कोटेचो जेतसिंघ

चंवाण सेरसिंघ वडी वडारणपूती रंभा चौथी सवा गोरू पेटा रा रुपिया 5) दीना कांमदार छंगाणी नथमल रावत समत् 1892 रा असाड़ सुद 13 नै रांणी मंगा भेरूदांन नै गांव पचरडो सांसण तां बाप तर रौ ईनायत कीयौ।[16]

इस प्रकार भीकमकोर ठिकानेदार सूरजमल द्वारा मारवाड़ रियासत में अमूल्य योगदान दिया गया।

***सहायक आचार्य**
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर (राज.)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः—

1. ख्यात भाटी (वीकमकोर), पृ. 388—401, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर
2. ओझा : जोधपुर राज्य का इतिहास, भाग—2, पृ. 769—773
3. गढ़ जालौर घेरे री बही, क्रमांक —33, बस्ता नं. 103, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर
4. ओझा : जोधपुर राज्य का इतिहास, भाग—2, पृ. 770—773
5. ख्यात भाटी (वीकमकोर), पृ. 388—401, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर
6. गढ़ जालौर घेरे री बही, क्रमांक —33, बस्ता नं. 103, पृ. 12—13
7. गढ़ जोधपुर घेरे री बही (सं. डॉ. हुकमसिंह भाटी), पृ. 3—7, राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर—2002
8. ओझा : जोधपुर राज्य का इतिहास, भाग—2, पृ. 203
9. गढ़ जोधपुर घेरे री बही (सं. डॉ. हुकमसिंह भाटी), पृ. 3—7
10. डॉ. विक्रमसिंह भाटी : सिंधल राठौड़ों का राजनीतिक और सामाजिक इतिहास, पृ. 191—192, परबतसिंह सिंधल — आकोरा पादर, मुम्बई—2016
11. राठौड़ां री ख्यात (सं. डॉ. हुकमसिंह भाटी), भाग—3, पृ. 734—738, इतिहास अनुसन्धान संस्थान, जोधपुर—2007
12. गढ़ जोधपुर घेरे री बही (सं. डॉ. हुकमसिंह भाटी), पृ. 4—9, राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर—2002
13. गढ़ जोधपुर घेरे री बही (सं. डॉ. हुकमसिंह भाटी), पृ. 32—34, राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर—2002
14. ख्यात भाटी (वीकमकोर), पृ. 392—401, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर
15. भाटी वंश का गौरवमय इतिहास, भाग—2, पृ. 212
16. राणीमंगा भाटों की बही (सं. डॉ. महेन्द्रसिंह नगर), पृ. 72, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केन्द्र, मेहरानगढ़ दुर्ग, जोधपुर—2007